

अकारेति ॥ अकारः रजोगुणो ॥ पहलो वर्ण भया कोट ॥ उकारः सत्व गुणो ॥
या कोट ॥ मकारः तमोगुणो ॥ कालो वर्णो लैयुक्तं भया कोट ॥ ६ ॥ अकारेति ॥ अकारः
रजोगुणो ॥ मकारः तमोगुणो ॥ कालो वर्णो लैयुक्तं भया कोट ॥ ६ ॥ अकारेति ॥ अकारः

अकारो पीतवर्णो रजोगुणो ॥ उकारः सत्त्विकः शुद्धो मकारः कृष्णवर्णो ॥
॥ ६ ॥ अकारश्चाकारश्च मकारश्च धनं जय ॥ इदमेकं सत्त्विकं तमोमिति ज्ञेयं
कं ॥ ७ ॥ त्रिविधोतिस्तेशां सदा हृदयं याम्यहं ॥ अकारे बुद्धिर्गोचरं तमोमिति
विज्ञेयं हृदि ॥ ८ ॥ मकारो मूर्ध्नि कुरुद्रो शक्तिरूपं वतुर्विधं इदमेकं सत्त्विकं

यज्ञात् ॥ ७ ॥ त्रिविधोतिः ॥ तीक्ष्णप्रकारो रजोगुणो ॥ उकारः सत्त्विकः शुद्धो ॥
हृदये मूर्ध्नि कुरुद्रो शक्तिरूपं वतुर्विधं इदमेकं सत्त्विकं ॥ ८ ॥ मकारो मूर्ध्नि कुरुद्रो शक्तिरूपं वतुर्विधं इदमेकं सत्त्विकं

...कारजो जालेन सो द्वा लना को यो नि भेन ...
...ताप नि द्वा लना होई न भनी शु ॥ १० ॥ त्रिस्था नेति ॥ ति नै स्थान ति नै मात्र ति नै दुःख को न
...अंशं गं व वतु ध्या दं त्रिस्था नेप न्ने देव तं ॥ ॐ कारं यो न ना ना ति द्वा लना गो न स द्वा लना
॥ १० ॥ त्रिस्था ने व त्रिमात्रं द अहं मं अं त्रि रक्ष म् ॥ त्रिम त्रि वा क्रमा त्रेशा प्रमा वे ता वि
शि ग्यं तो ॥ ११ ॥ यो नि वी जं महा वी जं वी जं त द्वी जं म ध्यं ॥ इति शरं ति परा शक्ति दु लर
त्रा ग र्था नि त्रै शु धर ले यु क्त भ का ति नै मात्रा दे धि शु ध्र मात्रा ले यु क्त भ या को प्रा ता व क
॥ ११ ॥ यो नि ति ॥ सु ध र्मा ज ति मं च छ न त का उत्प ति स्थान भ या को जी वी जं
ध त को प जी र्ति न भ या को यो महा वी जं जो ॐ कार अ ध्य यः स त्क र वृ त्त रं वृ त्त रं
... ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

अतिरिति॥ धैर्यरूपी अग्निवना ७८॥ मन्तरूपी पशुमा र्यामौ लो वना ७९॥ संतो अरु पि द
रुपयन इन्द्रिया रूपा य भुला ई मौला मा कोटि ते स आगामा हो मगरादि नुर अरु भय
ना स्वात्मा दयिंद्र यो ३॥ समय ज कहिं न्द ॥ १६॥ आत्मति ॥ आत्मा ला ई ता म धानी वना ७८

अतिरति मने गुण संतो स ल मि धं स्म त म् ॥ इन्द्रियारि प भुं ह्वा स्वात्मा अरु प्रपश्य
ति ॥ १६॥ आत्मान मरतिं ह्वा प्रगा वं बो नगर गी ॥ ध्यान निर्मथ नाभ्या ज्ञा देव पश्यति
जुं वेत ॥ ७७॥ इन्द्रो दहति पा पा नि दी र्यो मोक्ष प्रदायकः ॥ अथापे स व तो वा पि त्रि वि
धो श्रार गो त तु ॥ १६ ॥ १६॥

यो म धानि अग्नी र आ प्र गा व व नी र नुर ध्यान रूपी ने तिल गा ई मन्तरूपी द ही ला ई म धुर ज
है भै र ह्वा को न व नि ई आत्मा प्र का श रु न्द ॥ ७७॥ इत्येति ॥ मुस्तो ७८॥ आर रा गे व्या पो य ना ज्ञा
न म नै र ह्वा को न व नि ई आत्मा प्र का श रु न्द ॥ ७७॥ इत्येति ॥ मुस्तो ७८॥ आर रा गे व्या पो य ना ज्ञा

अतिरति मने गुण संतो स ल मि धं स्म त म् ॥ इन्द्रियारि प भुं ह्वा स्वात्मा अरु प्रपश्य
ति ॥ १६॥ आत्मान मरतिं ह्वा प्रगा वं बो नगर गी ॥ ध्यान निर्मथ नाभ्या ज्ञा देव पश्यति
जुं वेत ॥ ७७॥ इन्द्रो दहति पा पा नि दी र्यो मोक्ष प्रदायकः ॥ अथापे स व तो वा पि त्रि वि
धो श्रार गो त तु ॥ १६ ॥ १६॥

तिले ॥ तिले को धारा के न छिन्ना निरंतर भया को फिरी बडा घरा का कार का ज स्तोभ जा को र
ता प्रसाथ को प्रग्र जा न्यो भ न्यो वेद जा न्यो आ सा जा न्यो पनी ते से ला रि भु ॥ १९ ॥ प्राणा
यो मेति ॥ प्राणा याम जो हो सो बुला हुन प्राणा यामे सो बिहुरुन प्राणा यामे जो हो सो शिव
ते ल धारा मि वा छि यंदी चं द्यं दानि ना द वत् ॥ अथा प्र प्रणा व स्या जं प सं वे द स वे द वि त्
॥ १९ ॥ प्राणा यामे परं बुल प्राणा यामे परं शिव ॥ प्राणा यामे परं विहुरु पर बुल स्वरु
पकं ॥ २० ॥ बुला वे पर कं जे यं कुं भया विहुरु व्यते ॥ रे वं कं तु तथा जे यं क्षरा क्षिर प
रं शिवम् ॥ २१ ॥

पका हिं द्र न्यो प्राणा यामे जो हो सो पर बुल स्वरु प हुन ॥ २० ॥ बुले ति ॥ बुला को स्वरु प हु
रं कं क हि न्दं कुं भक जो हो सो विहुरु स्वरु प हुन रे वं कं ता क्षर अक्षर भ न्यो पनी पर स्या को
क व लो शिव स्वरु प हुन ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥ २१ ॥

नारकेति॥ बाहुलेगारिपरकहन्. सोहुलेगारि कुम्भकहन्. रेवकतादशोॐ कारगर्जन्
प्रुठतीमॐ कारलेगारि. एकप्राणायामकहन्. यो सोमोमोहो॥२२॥ प्राणायायुला
यामनाककाछिडमा. कान्ति अंगुलीलेक्षेकनु. दक्षिणा नाकका द्वारवाटप्राणायायु

नारकेदादशिशैवः कुम्भके षोडशीभवेत्॥ रेवकोदशोॐ कारप्राणायामः सोड
शते॥२२॥ प्राणाकनेष्टिकातथंदक्षिणां प्राणा परकम्॥ त्वामोर्जलपनरुन्नाजि
ह्लादन्नात्ररंगतः॥२३॥ नीलोत्पलदलस्यामनाभिमध्येप्रतिष्ठितम्॥ चतुर्भुजं

महात्मानं परकत्रविचित्रयेत्॥२४॥

कर्णशर्ज॥ त्वामत्ताई उभोलेगी. दुवैदातकाविचमाजिह्वालाई. एषनरु कहि जाया
कोकमनेप्राणायामहन्॥२३॥ नीलेति॥ नीलेकमलेकोदलकोदोयस्योमना
भयाकोदारवाहुलेयुक्तभयाकोनाभिमाडलमाख्याकोदिकोद

॥ २२ ॥
॥ २३ ॥
॥ २४ ॥

बुलगाणि वि० ॥ कुंभककासमयमातागतावर्षाभयाका ॥ कमलेकादीवमावस्थाका
बुलकाकनः हृदयकमलमाध्यानगर्जुर ॥ रक्षारक्षितामहभयु ॥ २५ ॥ रेवकेति ॥ रे
वकाकासमयमाशुऊजोनिर्मलः स्फटिककाजसोस्वितकोतिभयाका ॥ संप्रसापा

बुलगाणि रक्तसोभागपरक्षरक्षितामह ॥ कुंभकेहृदयेति संख्यानेत्रकमलास-
नम् ॥ २५ ॥ रेवके इश्वरं विद्याललाटस्थमहेश्वरं ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशजीम-
लेपापनाशनम् ॥ २६ ॥ सुक्षराणि च मात्राणि सर्वविंदुसमाश्रिता ॥ विन्दुभेदा-
तिनादेजमनादः केन भिद्यते ॥ २७ ॥

पकोजासगर्भाभयाका ॥ स्तामहेश्वरललाटमाद्यन्मनीध्यानगर्जु ॥ २८ ॥ अर्जुन
विनिगर्दधन ॥ सुक्षराणि वि० ॥ सुक्षरहरसाओहरसंप्रसापा विन्दुमाश्रयभैरव्या-
कादः लोविन्दुनादलेगरीः भेदभेदाद्यः सोमादक्याले भेदः खेभनाविनिगर्दधन

ॐ भगवान् आजागर्दछन् ॥ ॐ कारेति ॥ ॐ कारको जो अत्रितसंदेखी उद्या को जो ना
हू. त्यो नाद लाई वायु हिडनाले गरी ॥ केरी मुखर नाक कावीच मा वायु का संबालले प
नी नाद हरगो ॥ २८ ॥ इति ॥ ईशानाडि मा नुड्मार ह्या का छं विंगला नाडि मा सूर्य

ॐ भगवान् वावा ॥ ईशानाडि स्थितं वड्पिङ्गला भा नु वाहिनी ॥ सूर्ये गाडो भ
रूपे गा सतुहं सस्वरूपकम् ॥ २९ ॥ हंकारेति निर्गम प्रोक्तो सकारे तं प्रवेशनेम् ॥

वहो ॥ इहे दुवै कावीच को नाडी सुसुमा कहला ॥ ३० ॥ तस्मात् सूर्य रूपले गरी. शंभुर
ह्या का छं. साहि. हं सस्वरूप कहला ॥ ३१ ॥ हंकारेति ॥ हंकार मा प्राणा वायु
निकले छु. सकार मा भिन्ने वायु प्रवेश गर्दछन्. तस्मात् हंकार जो हो सो शिव स्वरूप हो
सकार जो हो सो सक्ति रूप कहिन्छ. तसै निमित्त. योज गत् शिवेश क्पात्म कहला ॥ ३२ ॥

प्रकटति॥ प्रकटते गशवा युको बला उनुता मुखदेधिदेधिरु॥ इडा नाडी १ पिगला
नाडी २ स्रक्ष्मना नाडी सुषुम्णा तेहिं छ॥ ३१॥ शक्तिति॥ वामनाडि बहुर्येर सक्तिरु
पभै बड मारस्या का छंद क्षिणा नाडी बहुर्येर शंभुरूप भौदिवा कर रस्या का छंद॥ ३२

प्रकटं वायुसंवागेल क्षयते मुखमध्यतः॥ इडा वपिङ्गला नाडी स्रक्ष्मना नाडी तृती
यकम्॥ ३१॥ शक्तिरूपं स्थितं वरुः वामनाडि पुवाहकम्॥ दक्षनाडि पुवाहकम्
शंभुरूपिदिवाकर॥ ३२॥ निर्मलं वसमुद्रस्य पत्रनादोलयंगतः॥ निगलं वप
दे प्राप्तां चित्रे तुल्यतांगते॥ ३३॥

निर्मलेति॥ अति निर्मल भयाको समुद्र का जस्तो गंभिर कोहि स्रक्ष्मना नाडी छ जाहा
नाद वनील यही ई जान्य सस्तो निगलम्य भयाको पद पाया पछि चित्र पत्री ताहिले छ

॥ ३३ ॥
इडा नाडी १
पिगला नाडी २
स्रक्ष्मना नाडी ३
सुषुम्णा नाडी ४

निर्वर्तने इति ॥ जव विन्नलय भयो ॥ तव ता हो सं परी समुख्य को कर्तव्यता निवृत्ति हो
इ जा छ कहिले भया परम भया पति परम भया कोई श्वर लाई देखा पछि ॐ छो
को क्षर रूप भया को जो हो सोहि पर दुल्ल स्व रूप हो भनी जानु ॥ ३४ ॥ नादात्तरति ॥

नादात्तर समुत्पन्न मध्यं भय प्रवाह कम् ॥ ॐ अदि परमानन्द तालु नु दिव्य व
स्थितम् ॥ ३५ ॥ अतोऽर्द्ध निरोद्ध न भय के मध्य वाह कम् ॥ यदि व्यमति शेष स्य
संसार मरणात् जेत ॥ ३६ ॥

नाद का वीच देखि उत्पन्न भया को मध्यम जो सु सु ना नाडी ले संग भया को र सो जो
ॐ कार तालु शिर का वीच मार रुठ सो जानु ताहा अति दुर्लभ छ भनिक ह्या को छ ॥ ३५ ॥
अतोऽर्द्ध ति ॥ र स सु सु ना ना क ने जा या क ने उ भोति र प्राणा वायु क ने अति यत्न ले निरो
धन ग ना ने मध्यम ना डि व हं छर त्यो पर माने न स्व रूप ना म भया को अति दिव्य पद पा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ये लोपनिमित्त न सात्रिधियो. योऽशरीरता भूयैधियो केवलमने को विलास हुना लै

नीजलिबलीखरानिभैजायाहुनालेभूयैरहम्याउमनमात्रवाकिरुवाहुती
नैजवस्यामाभूयैभयाको. योशरारकरभूयैभावलेजोजायुछ. मोतसे
पगाविधनदेविमुक्तहुछ ॥ ३८ ॥ भूयैभावेति ॥ यो कहियाकोभूयैभाव
भूयैभावोभवेदात्मापुण्यपापेनलीप्यते ॥ सभूयैभामिदंभातिभूयैना
नपरंपदं ॥ ४० ॥ तत्पदं परमभ्या ननतं ज्ञानं बुद्धिं पश्यते ॥ अभिमूलैस्त्रि
तं पश्यं नालं तत्पदं ज्ञाहुलं ॥ ४१ ॥ ~~को कहियाको~~
जोह ॥ सो आत्म कहिंछ तोहि भूयैभाव जाया भया पुण्य पाप दुवै कोलेपत
सुलाहुहुदैत. सो भूयैस्वरूपको भावना जवतायो सारिमाहुछ. सो भूयैहुनुजो
हो सोहि परम पद कहिंछ ॥ तत्पदं तत् ॥ तोहि पद जो हो सो व्यास कहिंछ. तोहि व्या
स जो हो सो उच पद हो भनि जावु ॥ ४१ ॥ १४ ॥ ४१ ॥

गी.सा.
५

नामिति॥ नाभिस्थानमासक कमलछ. तत्कोनालदश अंगुलपरि नाम भयाको
छ अतिकोमलतोनालछ अतिनिर्मलछ. ७ धोमुखभैरव्याकोछ. केराकाकु
लजसो आकारभयाको चंद्रकांतिवरोवरशीतलभयाको लामालामापात
कोमलंतस्यतं नालं नीर्मलं च अधोमुखम्॥ कदलीपुष्पसंकाशचंद्रका
न्तिमुशीतलम्॥ ४२॥ विशालदलसंपूर्णचारुहासं मुनिर्मलं॥ त्रिधा
मन्दमयं स्थानं तद्विज्ञापरमपदम्॥ ४३॥ द्दिस्थितं पंकजमस्य पत्रं स
कर्णिकं केशरपत्रमालं॥ अंगुलमात्रं मुनयो वदंति व्याघ्रं विस्मयं
लेयुक्तभयाको. अत्यंतभुन्दर॥ ४४॥ विशालदलेति॥ छैरेदललेखलभ
याकाराद्या अतिनिर्मलभयाको. कमलनित्ये आनन्दमयभयाको तमे
लुपदकहला ५छ॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥

रामः
५

हृदि स्थिति ॥ हृदय मारुत्या को कमल आठ पत्र ले पुन भया को हृदय ले पनी पुन
भया को सुवर्ण को जस्ता वर्ण भया को ताल ले पनी पुन भया को तमका विन मा अंगुष्ठ
मात्र प्रमात्र भया का पुरुष छ भनी देख्या सुनी ह भन छ न तिनै पुरुष लाई नित्य भया
हृदि स्थित पंकज मलय पत्र सक र्णिक के शर पत्र ताले ॥ अंगुष्ठ मात्र मुन यो व
दंति आये न विहं पुरुष पुराण म ॥ ४४ ॥ ज मा ग म र्थ ग म ना दि भू न्य वि दी
पदा पंक्ति भिरं ध कार ॥ पश्यंति ते सर्व जना त्तर र्थं न मा मिहं संपर मात्म रूपं ॥ ४५

नगार्तु ॥ ४४ ॥ ग मा ग मेति ॥ आ उ म्म जा न्या मार ह्या का ग म ना दि क्रिया ले न्य
या का विह जो जीव त म्का दी प भया का तिर प्र कार को अंध कार ना श ग न्या ॥ ४५ ॥
म लाई जो ता संपूर्ण ज न मार ह्या को देख द छ न तिहं स रूप भया का पा मा त्मा ह

गी. मा.
१०

देहेति ॥ देहता देवालयवन्नी उनु ॥ जीवता शिवाशिवहन्. अज्ञानरूपी देवलको
निर्माल्यफेकी. सोहं भावनालेप जागर्नु ॥ ४६ ॥ अर्जुनविनिगर्जलाग्या. तिमिले
खाको ताडः खलेपनी आगधमोगशत्रुकुडुर्गमभयाको. अथोमुखभयाको ह
देहे देवालय प्रोक्तो जीवो देवमदाशिव ॥ त्वज्येदज्ञाननिर्माल्यं सोहं भावेन
पूजयेत् ॥ ४६ ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ इति ते यदुगगभ्यंदुः पुराभ्यं जनाई नमः ॥
अथोमुखं यदाभूतं हृदयं केन गच्छति ॥ ४७ ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इदं यो
वायुभागे प्यभरितो दरे संस्थितः ॥ ततो गिरे देहसंस्थं ध्यायेत् ज्वालावलीयत
वक्रमलमा. कसो गरी प्रवेशगर्नु भरी. अर्जुनले विनिगग्या को अत्रि ॥ ४७ ॥ श्रीभग
वानुवाच ॥ आद्यागर्नलागु भयो ॥ इति ॥ इजना डाले गरी प्राणायामुला इति भोले जामु
ह. घटमा पूर्णगर्नु. ताहा देवि देहमारखा को अग्निरे ज्वालाका मालाले युक्ते भयो ॥ ४८ ॥

४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अर्जुनसंवादे अष्टादशोऽध्यायः ॥ १० ॥

रेवकमिति॥ फेरिविधियुक्तलेरेवकगर्भुर वायुकामराडलेमारहाकाइम्बरला
नलेआनगर्भु॥ ४८॥ फेरिपिंगलाताडीले वायुपरागदीमाउधोमुखभयाको
शकेशलेपुनभयाकोकमलो॥ ४९॥ पलाप्रकारलेकमलेपुकाशभयाप

रेवकविधिसंयुक्तवायुमंडलमध्यगं॥ धारयेदुलविनेसुसुन्नः पिंगल
वापुन॥ ४९॥ ततःपिंगलेयापर्यः प्राणदक्षिणायदि॥ अथोमुखेनु
हृत्पंचात्रिंशत्केशान्वितम्॥ ५०॥ अथोमुखेनुहृत्पंचमुक्तप्रसा
वनम्॥ गन्धानुपजकोशान्नेविकाश्याचित्राशत्रः॥ ५१॥

॥ ५०॥ अथोमुखेति॥ उधोमुखभयाकोहृदयकमललाइपुगावले॥ ५१॥ य
हिकमलेकाभिन्नपश्येपुऊक्षितगगयेरदेरुमारहाकोव्याधितस्कोसं

२ ५
अनेकेति॥ अनेकनातातरहकारत्नपत्री अक्षभयाकारत्नलेगरी सोभायमा
नछ कोसोवल्या अग्निजेलातले कोषाया देवता कापनिदेव लया
कोमनस्वरूपी श्रीभारागयगारह्याकाछत्र॥ तत्रे कोध्यानगर्नु॥ ५५॥ श्रीवसेति
अनेकरत्नसंकिर्तज्वलनार्कसमप्रभं॥ तस्यमयेस्थितं देवतागयगाम
नोमये॥ ५५॥ श्रीवत्सकोस्तभोरस्कं पुण्डरीकाक्षममुत॥ केसरकटित
त्रं वहारकुण्डलशोभितं॥ ५६॥ ५॥ ५६॥ ५६॥ ५६॥ ५६॥ ५६॥ ५६॥

श्रीवत्सकोस्तभमगितेगहिशोभायमानभयाकावक्ष्यस्थललेयुक्तभयाका
कमलकापत्रजेस्तालामालामात्रेले सोभायमानभयाका केहेपरीनाशन
हुत्या केसरकंधनीहारकुण्डलले शोभाभयाका॥ ५६॥ ५६॥ ५६॥ ५६॥

गी. मा.
१२

सहस्रेति॥ हजार फलाभयाका शेषराजका फलाले सो भायना नभयाका
सहका माऊ मावस्याका देवता का पनी देवता भयाका विलुको आनगर्नु॥ ५०॥
शंवेति॥ शंवेव कगदापन मुशलेखद भुर्वागालियाका आठवाहुले
सहस्र फला संयुक्त मध्ये देवा स्थित हो॥ शंवेव कगदापन मुशलेखद
सेवव॥ ५१॥ भुर्वागा धर श्वेव अष्टवाहुं धर हरि॥ शुद्ध स्फटिक संका
शंवेइका निमगिा प्रभं॥ ५२॥ पना किं जल्ल स द शंत प्रका वन स निभं
॥ सूर्य कोटि प्रति का शं वदु कोटि मुशी तलन॥ ५३॥
उक्त भयाका शुद्ध निर्मल स्फटिक जला वदु को निमगिा भयाका ताप को नाश
गर्वाहार को आनगर्नु॥ ५४॥ पचेति॥ कबले का केशर जला पीत वसु पया
के ल्या का अने जला का ति भयाका कोटि सूर्य वसे वरते ज भयाका कोटि व

सहस्रेति॥ हजार फलाभयाका शेषराजका फलाले सो भायना नभयाका
सहका माऊ मावस्याका देवता का पनी देवता भयाका विलुको आनगर्नु॥ ५०॥
शंवेति॥ शंवेव कगदापन मुशलेखद भुर्वागालियाका आठवाहुले
सहस्र फला संयुक्त मध्ये देवा स्थित हो॥ शंवेव कगदापन मुशलेखद
सेवव॥ ५१॥ भुर्वागा धर श्वेव अष्टवाहुं धर हरि॥ शुद्ध स्फटिक संका
शंवेइका निमगिा प्रभं॥ ५२॥ पना किं जल्ल स द शंत प्रका वन स निभं
॥ सूर्य कोटि प्रति का शं वदु कोटि मुशी तलन॥ ५३॥
उक्त भयाका शुद्ध निर्मल स्फटिक जला वदु को निमगिा भयाका ताप को नाश
गर्वाहार को आनगर्नु॥ ५४॥ पचेति॥ कबले का केशर जला पीत वसु पया
के ल्या का अने जला का ति भयाका कोटि सूर्य वसे वरते ज भयाका कोटि व

मोक्षति॥ भेतालामा जे स्का तललो कर ह्या को छः ता हा देधि उभोता वतल्लो
र ह्या को छः सुतललो क ता जं घ देश मार ह्या को छः जा नु देश मा उता ललो क छ
॥६०॥ महा तलेति ॥ महा तललो क जस्काः उरु देश मार ह्या को छः उ ह्य देश मा
पादा द धातु लं विद्या पा दो र्द वि तलं भवेत् ॥ सुतलं जं घ देशे तु जा नु देशे
तथा तले ॥६१॥ महा तले तदु र्भ्या गु ह्य देशे र सा तले ॥ पाताले क टि देशे तु स प्र मं
परि किर्त्तितं ॥६२॥ भूर्लोकं नाभि मध्य स्थं भुवर्लोकं तु कुक्षि गं म् ॥ हृदि स्थं स्वर्ग लोके म
मह लो कं नु व क्षा मि ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥
र सा तले छः पाताले को क ता क टि दे स मार ह्या को छः र सा ता ह ले सा त लो क र ह्या का र्द ॥६४॥
भूर्लोकं ति ॥ भूर्लोकं ता नाभि स्थान मा छः भुवर्लोकं जस्का को षा मार ह्या को छः हृदय मा त
र्ग लो क छः मह लो क ता छा ति मा ज स्का र ह्या को छ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥

सा.
१३

जनेति॥ जनलोकता जस्का कण्ठ देहा मारस्या कोछ. आह देधि उभो. जस्का ललाट पर्यंत मात
पल्लो कलो कारस्या कोछ. सत्पल्लो कता जस्का तालु का छिद्र मारस्या कोछ. पलातर हले. एकै
श्वर मा सोध भुवन रस्या कोछ ॥ ६३ ॥ भूर्भुवोति॥ भूर्भुवस्व भया का. व्याहृति मंत्र ले गरि शी
जनलोकं तु कण्ठ च अत ऊर्ध्वं तपस्तथा॥ सत्पल्लो कं तालुरंध्रे भुवनानि ब्रतुर्दशः॥ ६३ ॥
भूर्भुवः स्वः रिति मंत्रैः शरीरं परिशोधयेत्॥ शरीरं प्रगावंध्यायेद्विद्युत्सो दामि त्रियथा
॥ ६४ ॥ तस्य मध्ये गतं देवं मंत्रमेकाक्षरं परम॥ ओमित्येकाक्षरं रूपं हृत्पद्मं च विंशो
रिरको सोध त्रगर्गुर. यो शरीर लाई. पुत्रा व मय छ भत्री ध्या न गर्गुर. विजुली का जसो ते जया
कोछ भत्री सम हनु ॥ ६५ ॥ तस्योति॥ तस्यै शरीर का कीच मा. इश्वर एक क्षर मंत्र मय भया का छ
भानि ध्या नु गर्गुर. त्या मंत्र परी ॥ ॐ कार अक्षर रूप भया का हृदय रूपी क मल मारि ह्युति

जनेति॥ जनलोकता जस्का कण्ठ देहा मारस्या कोछ. आह देधि उभो. जस्का ललाट पर्यंत मात
पल्लो कलो कारस्या कोछ. सत्पल्लो कता जस्का तालु का छिद्र मारस्या कोछ. पलातर हले. एकै
श्वर मा सोध भुवन रस्या कोछ ॥ ६३ ॥ भूर्भुवोति॥ भूर्भुवस्व भया का. व्याहृति मंत्र ले गरि शी
जनलोकं तु कण्ठ च अत ऊर्ध्वं तपस्तथा॥ सत्पल्लो कं तालुरंध्रे भुवनानि ब्रतुर्दशः॥ ६३ ॥
भूर्भुवः स्वः रिति मंत्रैः शरीरं परिशोधयेत्॥ शरीरं प्रगावंध्यायेद्विद्युत्सो दामि त्रियथा
॥ ६४ ॥ तस्य मध्ये गतं देवं मंत्रमेकाक्षरं परम॥ ओमित्येकाक्षरं रूपं हृत्पद्मं च विंशो
रिरको सोध त्रगर्गुर. यो शरीर लाई. पुत्रा व मय छ भत्री ध्या न गर्गुर. विजुली का जसो ते जया
कोछ भत्री सम हनु ॥ ६५ ॥ तस्योति॥ तस्यै शरीर का कीच मा. इश्वर एक क्षर मंत्र मय भया का छ
भानि ध्या नु गर्गुर. त्या मंत्र परी ॥ ॐ कार अक्षर रूप भया का हृदय रूपी क मल मारि ह्युति

श्री. मा.
१४

तस्मै तन्को जा त्रामा केवल योग देविंदो ओ के हूँ न योग ने मात्र देवि न्या. अल्पक अरु हे
गुने न देवि न्या भया का भनी आजा गर्दछन् ॥ ६८ ॥ तस्माद् ईश्वर कन हे पार्थ परमेश्वर भयो
का कन अर्कातिर विन नदी कन भजन नगर. तिकस्ता भया घमभवले रहित भया का शि
तादृशं परमं रूपं स्मरे पार्थ अत्र न्यभाक ॥ कारणा योग विज्ञानं हेतु साधन वर्जित
म् ॥ ६९ ॥ निश्चयेन विजानिष्यात् यः स भावरहितं शिवं ॥ अनात्र स बद्ध रहितम्
स्वयं ज्ञेयं वर्जितम् ॥ ७० ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अदृश्य भावनाः नास्ति दृश्यमा
ना विन श्यति ॥ अवर्गाश्च स्वयं बुद्धि कथं ध्यायेति योगिनः ॥ ७१ ॥

वक्त्रे न रूप भया का स्वयं जने ले रहि भया का केवल आनन्द नय भया का भगवान् को भज
नगर भन्दा अर्जुन के रि विंति गछन् ॥ ७० ॥ अदृश्येति ॥ हे फल. न देवि या का वस्तु ना
भाव ना विन रहै न देवि या का भया ना श होई न रह ॥ तस्यैव वर्ग पनी न भया का स्व
रूप पनी न भया का बुद्धि को योगी हरु क सो गरि ध्यान गर्दछन् भानि मुने न विंति गदभि

॥ ७१ ॥

श्री भगवान् आजागर्दभया ॥ अंशोतं अंतः करणमापन्नोऽर्थाहपलेरह्यका वाहिरपत्रीप
राविबमापनि कर्णाहपलेरह्यका संकर्णमाकर्णाहपलेरह्यका हतभरी जातु योमम
चिकोले क्षणा हो ॥ १२ ॥ येथेति ॥ जसो भुद्धिनिर्मलभयाको आकाशनामचले ठा

श्री भगवानुवाच ॥ अंतः परां बहिः परां मध्य परां सनातनं ॥ सर्व परोति मातेति
समाधितस्य लक्षणं ॥ १२ ॥ याथाविशुद्धमाकाशः सहस्रैवाधुमं गडलेन ॥
भूभाउलीयते तद्ददात्मन्येवाविले जगत ॥ १३ ॥ यावत्पश्येत्तव गाकारं ताव

कालं विदितयेत् ॥ मित्रे कर्मोपधाका सममहाकासे विलीयते ॥ १४

कदहरांभकारले व्यापृगर्धमेवमय आकाशो होई जातु करित्योह रायापहि ओ
काशो निनिर्मल होई जातु तसो अज्ञानरूपी मेव कोनास गग ॥ १४ ॥ योजगत्सम
रां आत्ममय होई जातु ॥ १५ ॥ यावदिति ॥ यावत्कालसम्ममहा आकाशो रुदेन ता
हात्मन्येवा न गर्नु ॥ जसो यजोपुटदामा यजामित्ररह्यको आकासे मा निनि जातु

॥ १५ ॥ यावत्कालसम्ममहा आकाशो रुदेन ता
हात्मन्येवा न गर्नु ॥ जसो यजोपुटदामा यजामित्ररह्यको आकासे मा निनि जातु

सा. १५ विभिन्नेति ॥ तस्यैवोपकृतदेहकोऽभिमानमात्राभयापद्धिः आत्मा परात्मा माली न होई जा
छ. तव तात्त्वो न रुं भं न्या भाव नो होई जा न्ह. त्या भाव नो रूपी सुत्र न परात्मा कन स्मर नो गर्त
हे पार्थ ॥ ७५ ॥ हृत्प जति ॥ हृदयरूपी कनल मार त्या का उभे सुख भया को स म्ना मे स

विभिन्ने प्राकृतदेहे यथात्मा परमात्मनिः ॥ ताद संपरमात्मानं न स्मरेत् पार्थ मन
ने कम् ॥ ७५ ॥ हृत्प न के उर्द्ध सुखं पश्येद्वापि शिवाकृतिम् ॥ अंगुष्ठमात्रं भवत्वं
आये दांकारमिच्छेत् ॥ ७६ ॥ आसने शयने वापि तस्य गच्छेत् सदा भुवि ॥ तं

स्मात्सर्वप्रयत्नेन योगयुक्तो भवार्जुन ॥ ७७ ॥
ॐ कारस्वरूपी ईश्वर कन हं शो भ्या न गर्तु ॥ ७८ ॥ आसनेति ॥ कला मा भयो वा सुत्रा मा
भयो वा उद्दो मा पनी हि इदा मा पनी सदा भु क्व चित्त भे संपरापित्त युक्त योग युक्त हो
इस दार हनु हे अर्जुन ॥ ७९ ॥

अंतेति॥ अंतः करणमाकोसंगपनी बाहिरकोसंगपनी आत्मासंगपनी संपर्कसंगपनीछो
डीरुकेभयेर आत्माते आत्माते हेनु॥१८॥ देहति॥ देहको नाशभयोभया उद्धि काहाद
विहोला उद्धि न भयोभया स्मरण काहावाट होला स्मृति को नाशभयोभया जानेकोहा
अंतसंजं वहिः संजं आत्मासंजं परित्र्य ज्यत्॥ सर्वसंगतिरनात्मा पुत्रेदात्मा न मा भ
नि॥१८॥ देह न शे कुतो उद्धि पुद्धि हीने कुतः स्मृतिः॥ स्मृति होने कुतो जानं जान हीने
कुतो गतिः॥१९॥ अत्यंतमलिनं देहं देही या त्वं न निर्मलं म॥ उभयोरनुरंजा न्योश्च
सौ वंदीधीयते॥८०॥

वाट होला जानै हीन भयोभया तस्को उन्नम गति काहावाट होला तस्मिन्मित्र देहको संवि
तागने॥८१॥ अंतेति॥ यो देहता अत्यंतमलिनं छ देहि जो आत्माता अति भुद्ध छ॥ इडके
को अंतर जा न्या भया का जानी प्रह्वले कस्को भुद्ध गर्नु कसेको भुद्ध गर्नु पदेन आत निर्मल

॥ ६८ ॥ इति सुतो देहसंज्ञे चटिका इव ॥ बाह्यशरीरेन शुद्धं निश्चयं दुर्लभं विन्दति ॥ ६८ ॥

जी. सा. नवति ॥ नो हि दुर्लेखं भयाको ॥ यो देहकलो दुर्भया घटीयं नैव हनु ॥ यावत्कालं
समं प्रसजते न ॥ तावत्कालं समं बाहिरगत्या काशौ च लेभु हनु ॥ बाहिरद्वस्तु जा
यो भयाभिन्नपत्नी भुङ्क्ते ॥ ६९ ॥ ग्रंथेति ॥ जात्या जातिले जाहो समं जातं भयाको
ग्रंथमन्वेष्टयेधामान् जावद्ज्ञानं विन्दति ॥ दुर्लभा नीलमयं जात्या ग्रंथं त्यजति
शेषवत् ॥ ७० ॥ पठते चतुर्ष्वेदोऽर्थमज्ञातुमनेकधा ॥ आत्मानं यो न विन्द
ति सर्वतः पशवः स्मृताः ॥ ७१ ॥

॥ ७२ ॥ पठतेति ॥ यो न तां ह्यसंमत्ता ह्येति ज्ञानं जानु ॥ बाह्यजस्तो व्यापकं भयाको आत्मारहं दुर्भया जा
नं भया भया ॥ अतो जायते धीको रसवि काल्या पद्वि सिद्धि फलं दंतं शेषं पतिरु ॥
नो हि जा जातेन सो ननु व्यपशुं लभे हनु भनि जानु आत्मा देवी दोष्टो के हि छने ॥

तीर्थधिति॥ तीर्थादिमा गयेरु प शुभात रुम्याय जग मेरु काशमा पथरमा मारामा च
नायाका प्रतिसामा अग्निमा इश्वरमित्तं भंसाभावना जोरावद ह सोम शुभमूठ
कहिरु ॥ ८४ ॥ वाहरिति॥ आफना देहमा रया का आत्मा मरुपी इश्वर छो डिजाता
तीर्थधुप शुभजे सु काशमा वागान ड नये ॥ प्रतिमा शुभ वही शुते मराः मूठने
तमः ॥ ८४ ॥ वाहः शुभतियः कश्चित्पत्तका देहस्थमा श्वरन् ॥ स्वगृहेषा
यसंन्यत्ताभीक्ष्णमतिदुर्मतिः ॥ ८५ ॥ इदं फलमिदं तीर्थयो जरमेते च दुर्म
तिः ॥ आत्मतीर्थ न जान नितीर्थ सेवा निरुताः ॥ ८६ ॥
तीर्थादिमा शुभद हन सोम शुला ई दुर्मतिले घे रिआफावर कापी के को थिर छोडा
मिक्षामा अजा म्या जेता रु म नी जा मु ॥ ८५ ॥ इदमि ती ॥ या तीर्थ गम्या को यो फल
मित्तं मनी जोता वारं वारा फ देर ह ह सोता आत्म तीर्थ न जान्या दुर्मति रु

तिलेति॥ ज्ञेतेति न माते न र हं छु दद ना भः काठ मा जा ॥ ज्ञेतातर लेर हं छु तमै सं प
शो देह मा आत्मा पनी का प्र भो र ह्य को छ ॥ ८३ ॥ ज्ञेतेति ॥ ज्ञेतेने गरीयो देह शो भा
वो ५ छ ॥ ज्ञेता न पनी पुन मा आ प्र य भया को छ भन्यात हि पुन ज्ञा न रूपि अ ग्री ले
ती लम ये यथा ते लं क्षीर म ये यथा घृत म ॥ काष्ठ न दू यथा व ह्नी देह देह ध
व स्थित म ॥ ८४ ॥ ज्ञेतेने दी यते देह य पुन गिा समा मि त म ॥ पुन ज्ञा नाग्नि
मा नि न्ये देह ते पुण पाप क म ॥ यथा जले जलं मि श्रं क्षीरे क्षीरं घृतं घृत म ॥
अथ अपेयि भवेदु त्म यथात्मा पर मात्म नि ॥ ८५ ॥

गतिः ॥ ज्ञेता न को पाप पुण्ड व जली जा न्ते ॥ ८६ ॥ यथेति ॥ ज्ञेते पा नि मा पा नी घृ
मा घृ ॥ दुद मा दू द मि ला या व छि मि न्न गत ॥ न रु दे न त ले पाप पुण्ड न भया को जा
नि को आत्मा पर मात्मा को भेद क नि प मि रु दे न कारा के ब ले ज्ञेते छ ॥ ८७ ॥

न हर्षमिति ॥ हे जर्जुरपदम हर्षमयापनी योगभया को धन्य हो भनी ॥ ५० ॥ जीतेति ॥ गीता सार
गरी जो ता योग सा तत्पर ला रह ॥ तस्का शय जन्म का पाप पनि सब जलि जा नु न ता ॥
रं वार यो गीता ला ग्या मनुष्य को नहि मा का हा सम्म कह ॥ ५० ॥ जीतेति ॥ गीता सार

गीता सार मिदं शास्त्र गीता सार समुद्र वन ॥ तत्र स्थित मधुसूत ज्ञान वेद सास्त्र समु
द्र यत् ॥ ५१ ॥ पठतां भूत्वा वापि विश्वो मोहात्म्य मुक्त मम ॥ भारतं भुक्ति सर्वसं

विश्वोर्वैकुण्ठ समुद्र वन ॥ ५२ ॥

ममया को ग्रंथ ता ॥ गीते बाट नि का ल्या को हो ॥ तो हा वेद को र शास्त्र को एक वा क्य भया
को पुस्त ज्ञान र सा को छ ॥ ५१ ॥ पठतामिति ॥ योगिता सार पठता पनी ॥ अथवा मुनी सा
पनि विश्व को मोहात्म्य ले युक्त भया को ॥ भारत ह पी भुक्ति को ज्ञान ले युक्त भया को श्री क
स्तुत सुख द मित्र का ल्या को हो ॥ ५२ ॥

अष्टादशोक्तिः ॥ केरिमुठारपुण्ड्रानवव्याकराः चारवेदमथत्रगतिः वेदव्यासनामानुजि
निभारतवनाया ॥ ९३ ॥ भारतमिति ॥ तेहिभारहृषीसमुद्रमधीः गीता आहारअध्या
यनिकात्माभया ॥ तेहिगीताकने श्रीभगवानेलेमथनुरिसारनिकालिकनश्रुते
अष्टादशपुण्ड्रानिनवः व्याकरणात्रयः ॥ निर्मथेवतुरोवेदोनुनिनाभारतः
कृतम् ॥ ९३ ॥ भारतोमथनंगीतागीतानिर्मथनस्यव ॥ सारमुद्रन्यद्रुपेन अ
र्जुनस्यमुच्यते ॥ ९४ ॥ गीतानामसहस्रं च सतयराजमनुस्मृतिः ॥ यस्यकु

स्तौतुवर्तते सर्वेनारायणस्वयम् ॥ ९५ ॥

नकाभुविमाहोमगदीभया ॥ ९४ ॥ गीतेति ॥ गितोसस्यनामस्तयराजभनीमनुको
स्मृतिर्हृदयस्यजस्कापेटमारह्याकाछनसोनारायणकहलाड्डन ॥ ९५ ॥ ९५ ॥

रामः
१८

बाहिर को मल आकाल जाका निमित्त बारं बार जल ले स्नान गर्दछन् ॥ ५४ ॥ कवेरगी
तारुपी जलमा स्नान गेयो भयो सारुपी मल को जाइरुछ ॥ ५५ ॥ सेवका आते ॥
गीता जो छु संहरा शास्त्र मय कहलाउछन् मनुको स्मृति जो छु सोता सेहरा धर्म
मल निमेषितं पुंसां जल स्नाने दिने दिने ॥ सरु जीतां भसि स्नाने संसार मल
नाशनम् ॥ ५६ ॥ सर्व सास्त्र मयी गीता सर्व धर्म मयी मनुः ॥ सर्व तीर्थ मयी गे
गं सर्व देव मयी हरीः ॥ ५७ ॥ पाद मेवा ऊ पादं वा श्लोका ऊ श्लोक मेव वाः ॥ नि
मं धारयेते विप्रसमाक्षमाधिगच्छति ॥ ५८ ॥
य कहि पाकोछु गंगा जो छु संहरा तीर्थ मयि छु ॥ ५९ ॥ पादेति ॥ गीता को सब
पद हरि सापनि आधा पाउ हर सापनी ॥ आधा श्लोक हर व सापनी जाति मया दग
दछन् सो मनु मनु कछन् ॥ ६० ॥

वेति ॥ आकाशमय आत्मावनाडुनु आत्मा मय आकाशवनाडुनु आकाश आ
 माकोय कत्व भयापदि केहि केहि पानि विन नान गनु ॥ ९९ ॥ कहेति ॥ कुरु मर्याद
 दाये गीता नाम भयादि हरीतकी त्रिकल्याको छ दिन दिन तत्कन हेन हो किन त्या
 खन धे कुरु आत्मा आत्मा मधे वगं कुरु ॥ आत्मा मधे वगं कुरु त्रिकिञ्चि
 दपि विनयेत ॥ ९९ ॥ कुरु मर्याद समुद्र ता गीता नाम हरितकी ॥ हेरना ये वाय
 ने कलौ मल विमोचनी ॥ १०० ॥ गीता गीता न कर्तव्या किमप्ये शास्त्र संग्रहे ॥ सु

र त्पत न के चोरे गीता ध्यायी न पश्यति ॥ १०१ ॥
 दौन संसार रूपी रोग को नाश गर्दछ तस्मिन्निमित्त ध्या ॥ १०० ॥ गीतेति ॥ जो आत्मा त
 यो संसार का विषय मा गीता गीता मात्र ज पनु अहंते विस्तार भयाको शास्त्र यो
 काहु नु गीता पाठ गर्ना लाईता छोरन कपनि हेनु पदं गीता जो छ अमृत माक्ष

॥ १०० ॥ गीतेति ॥ जो आत्मा त
 यो संसार का विषय मा गीता गीता मात्र ज पनु अहंते विस्तार भयाको शास्त्र यो
 काहु नु गीता पाठ गर्ना लाईता छोरन कपनि हेनु पदं गीता जो छ अमृत माक्ष